हमारा परिवेश

भाग–3

कक्षा 5 के लिए पर्यावरण अध्ययन पाठ्यपुस्तक

अध्याय - 15

हमारे प्रेरक

T7G3S6

बलिदान की गाथा : मानगढ़ धूणी (मानगढ़ पहाड़ी), बाँसवाड़ा (राजस्थान)

सूरज धीरे-धीरे पहाड़ियों के पीछे छिप रहा था लेकिन मानगढ़ की चोटी पर एकत्रित हजारों नर-नारियों की आँखों में आशा और विश्वास की लौ जल रही थी। वे गोविंद गुरु के नेतृत्व में अपने अधिकारों के लिए एकजुट हुए थे। पहाड़ी पर चारों ओर गूँजते भजन और मंत्रोच्चार वातावरण को एक अद्‌भुत आध्यात्मिक शक्ति से भर रहे थे।

अंग्रेजी सेना का हमला

17 नवंबर 1913 की सुबह में अंग्रेजी सेना ने मानगढ़ पहाड़ी को चारों ओर से घेर लिया। उनके हाथों में बंदूकें थी और तोपें तनी हुई थी। अंग्रेजों ने चेतावनी दी—''पहाड़ी खाली कर दो, नहीं तो परिणाम बुरा होगा!''

लेकिन मानगढ़ पर एकत्र जन-समूह अपने अधिकारों के लिए अडिग थे। वे गोविंद गुरु के बताए नियम का पालन कर रहे थे 'अन्याय नहीं सहेंगे, न ही हिंसा करेंगे।'

अंग्रेज अफसर के इशारे पर बंदूकें तन गईं और फिर...

धायं! धायं! धायं!

गोलियों की बौछार होने लगी।

पहाड़ी पर खड़े सभी स्तब्ध थे लेकिन कोई पीछे नहीं हटा। वे भजन गाते रहे और एक-दूसरे का हाथ पकड़कर डटे रहे।

चारों ओर चीख-पुकार मच गई। निर्दोष गोलियों से छलनी होते गए लेकिन किसी ने भी पहाड़ी नहीं छोड़ी। माताएँ अपने बच्चों को सीने से लगाए शहीद हो गईं। बुजुर्ग अपनी लाठियों के सहारे खड़े-खड़े गिर गए। युवा अपनी मातृभूमि को बचाने के लिए अडिग रहे।

संकल्प और संघर्ष-

गोविंद गुरु ने महर्षि दयानंद सरस्वती से प्रेरित होकर अपने अनुयायियों को अहिंसा और आत्मनिर्भरता का संदेश दिया था। वे चाहते थे कि समाज शिक्षा ग्रहण करे, शराब और बुरी आदतों को त्यागे और अपनी संस्कृति को मजबूत करे। लेकिन यह बात अंग्रेजी सरकार और स्थानीय जागीरदारों को स्वीकार नहीं थी। अंग्रेजों ने इसे विद्रोह मान लिया और मानगढ़ पहाड़ी को घेर लिया। कुछ ही घंटों में गोलियाँ चलने से लगभग 1500 नर-नारी वीरगति को प्राप्त हुए। रक्त रंजीत हुई मानगढ़ की मिट्टी आज भी इस बलिदान की गवाही देती है।

मानगढ़ धूणी आज समाज के लिए एक तीर्थस्थल बन चुका है। आज भी मानगढ़ पहाड़ी स्वाभिमान और बलिदान की प्रतीक बनी हुई है। यह स्वाभिमान, संस्कृति और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए किया गया एक अद्वितीय बलिदान था। यहाँ हर साल हजारों लोग इस महान बलिदान को याद करने आते हैं।

जीवन-परिचय

क्रांतिनायक गोविंद गुरु

- नाम : गोविंद गुरु बंजारा
- जन्म : 20 दिसंबर 1858, बांसिया गाँव, डूँगरपुर, राजस्थान
- देहावसान : 30 अक्टूबर 1931
- योगदान :
  - सम्प (एकता) सभा की स्थापना (1883)
  - भगत आंदोलन (1890 के दशक)- धूणी
  - विद्यालय स्थापना, स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग, अन्याय के विरोध की प्रेरणा।
  - मानगढ़ बलिदान (17 नवंबर 1913)- अंग्रेजों द्वारा हजारों लोगों का नरसंहार जिसे 'राजस्थान का जलियांवाला बाग' कहा जाता है।
- राष्ट्रीय स्मारक का दर्जा (2022)- मानगढ़ धाम को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया गया।
- उनके सिद्धांत :
  - शराब, माँस, चोरी और व्यभिचार से दूर रहना।
  - परिश्रम कर सादा जीवन जीना।
  - प्रतिदिन स्नान, यज्ञ एवं कीर्तन करना।
  - विद्यालय स्थापित कर बच्चों को शिक्षित करना।
  - अन्याय का विरोध और स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करना।